।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ।।



।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

दिव्यचरितप्रभा

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

विरचित--

दिव्यचरितप्रभा

प्रकाशक--

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ शिक्षा समिति

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ, जि० अजमेर (राज०)

भाद्रशुक्ल १२ शुक्रवार वामन जयन्ती महोत्सव

दिनांक ९/९/२०११

वि० सं० २०६८ श्रीनिम्बार्काब्द ५१०७

पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
किशनगढ, अजमेर (राजस्थान)
फोन नं0 01497 - 227831

प्रथमावृत्ति - २०००

न्यौछावर
पाँच रुपये

मुद्रक :
कम्प्यूटर क्राफ्ट, जयपुर

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

किञ्चित्स्वकीयभावाञ्जलि

भारतवर्ष की परम पवित्र धरित्री पर जब भी धर्म विपरीत किसी भी प्रकार की विषम समस्या उपस्थित होती है तब अनन्त-कोटिब्रह्माण्डनायक सर्वनियन्ता भगवान् सर्वेश्वर श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण स्वयं किंवा अपने नित्य दिव्य पार्षदों को इस भूतल पर मनुज रूप से अवतीर्ण कराने का अनुग्रह करते हैं। उन्हीं पावन पार्षदों में विक्रम सम्वत् की १८ सदी में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज का प्राकट्य हुआ। आपश्री ने जयपुर राज्यान्तर्गत ''सराय'' नामक ग्राम में गौड़ विप्रकुल को सुशोभित किया। आपके पिता श्रीभवानीरामजी जोशी थे, और आपका पूर्व नाम श्रीशालग्रामजी था। आपश्री के गुरुवर्य श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज थे। जब आपने इन्हें विरक्त रूप में मन्त्रदीक्षा देकर अपने उत्तराधिकारी श्रीयुवराज पद पर सुशोभित किया, उस समय आपका विरक्त नामकरण संस्कार श्रीसर्वेश्वरशरण किया। मिति-पौष कृष्ण ६ वि० सं० १८४१ में आपश्री आचार्यपीठासीन हुए। तब से आप श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के रूप में परम विख्यात हुए।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज अपने समय के

उद्भट वैदुष्य के रूप में अतिशय विख्यात थे। महाकवि श्रीदेवर्षि मण्डन प्रणीत "जयशाह सुजश प्रकाश" में आपका लोक पावन चरित का विशद वर्णन है जो परम मननीय है। आपश्री का निम्बार्काचार्यपीठ (सलेमाबाद) के अतिरिक्त जयपुर भी विशेषतः विराजना होता था और जयपुर नरेश सवाई श्रीप्रतापसिंहजी आपके परम कृपापात्र शिष्य थे। आपश्री ने श्रीमद्भागवत महापुराण पर "श्रीसर्वेश्वरी" टीका की रचना की जिसका उल्लेख देवर्षि मण्डन कवि ने स्वरचित "जयशाह सुजस प्रकाश" ग्रन्थ में किया है। अन्वेषण करने पर भी यह टीका उपलब्ध नहीं हो रही है अस्तु उसके पुनः अन्वेषण के लिए प्रयत्नशील हैं श्रीसर्वेश्वर प्रभु के अनुग्रह से कदाचित् सफलता मिल जाय। आपश्री का एक स्तोत्र "श्रीगोपीजनवल्लभाष्टक" जो प्रकाशित है और इस प्रस्तुत ग्रन्थ में भी यह सानुवाद प्रकाशित किया गया है। उसके अनुवादक पं० श्रीवासुदेवशरणजी उपाध्याय हैं जो आचार्यपीठस्थ महाविद्यालय के प्राचार्य है। श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज का आचार्य-पीठासीन कार्यकाल मिति पौष कृष्ण ६ वि० सं० १८४१ का है तथा परमधाम-वास की पुण्यतिथि ज्येष्ठ कृष्ण ८ रविवार वि० सं० १८७० की है। आपश्री जब रथों घौड़ों आदि अपने समस्त प्रमुख-प्रमुख परिकर सहित श्रीवृन्दावन अलवर मार्ग की ओर से पधार रहे थे तब आगर-नागल के मध्य प्रतापगढ से उस ओर ४ कोस पर आपका आकस्मिक परमधामवास हो गया। वहीं पर आपकी चरण पादुका सहित एक विशाल दर्शनीय छत्री का निर्माण तत्कालीन जयपुर नरेश ने कराया। साथ ही जयपुर में आपश्री के

उत्तराधिकारी श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी महाराज के पावन सान्निध्य में जयपुर नरेश श्रीसवाई जयसिंहजीने श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज का स्मृति-महोत्सव एवं वृहद्-सम्मेलन मिति-पौष शुक्ल १५ पूर्णिमा विक्रम सम्वत् १८७६ को जयपुर में आयोजित किया, जिसका यथादृष्ट अनुपम वर्णन "श्रीजयशाह सुजस प्रकाश" ग्रन्थ में महाकवि श्रीदेवर्षि मण्डन ने किया है यह ग्रन्थ प्रत्येक भगवज्जनों के लिए परम उपादेय है इसका मनन करना अतीव अभीष्ट है।

वर्तमान में महाकवि श्रीदेवर्षि मण्डन की पावन परम्परा में विद्वद्वरेण्य देवर्षि श्रीकलानाथजी शास्त्री (राष्ट्रपति सम्मानित) भूतपूर्व-अध्यक्ष-राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा निदेशक-संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार, प्रधान सम्पादक-"भारती" संस्कृत मासिक विद्यमान है जिनका उद्भट वैदुष्य संस्कृत जगत् में परम प्रसिद्ध है। आपने पूर्वोक्त ग्रन्थ "जयशाह सुजस प्रकाश" में प्रस्तावना में सर्वविध विवेचन प्रमाणिक रूप से उल्लिखित किया है जो नितान्तरूपेण परम पठनीय एवं अनुशीलनीय है।

प्रस्तुत इस अतिलघु कलेवर रूप ग्रन्थ में और भी विस्तार पूर्वक चरित वर्णन करने की मानस में भावना थी किन्तु शारीरिक अस्वस्थता तथा ८३ वर्ष की आयु के वार्द्धक्य के कारण और मिति-पौष शुक्ल ५ शुक्रवार वि० सं० २०५१ तदनुसार दिनांक ६/१/१९९५ में शल्यक्रिया (सर्जरी) विशेषज्ञ परमभावुक-महामनीषी डा० श्रीगुणवन्तसिंहजी झाला, अजमेर द्वारा पथरी

सन्देह में १५ इञ्च अर्थात् १ फुट ३ इन्च लम्बाई में उदर के वाम भाग में शल्यक्रिया (ओप्रेशन) होने से शल्य क्रियाजन्य लघु आन्त्र व्याधि अर्थात् सर्जिकल हरनिया होने से महती कष्टानुभूति होती है जिस कष्ट को होते १७ वर्ष व्यतीत हो गये। अब यह जरावस्था हेतु अतिशय कष्टप्रद होता जा रहा है। ओप्रेशन में एक वाम भाग का वृक्क (गुर्दा-किडनी) भी निष्क्रिय होगया। ऐसी स्थिति में कुछ भी लेखन कार्य करना दुष्कर होगया। जो हो सर्वनियन्ता सर्वज्ञ श्रीसर्वेश्वर राधामाधव भगवान् सब मङ्गल करेंगे- "हरिस्मृतिः सर्व-विपद्विमोक्षणम्।"

अच्युताऽनन्त गोविन्द नामोच्चारणभेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥

इन उपर्युक्त वचनों से अपने स्वाराध्य का चिन्तन-स्मरण ही प्रमुख है। जिन निखिलभुवनमोहन वृन्दावन नित्यनवनिकुञ्जेश्वर युगलकिशोर श्यामाश्याम सर्वेश्वर श्रीराधाकृष्ण भगवान् का प्रतिपल आराधन करना मानव जीवन का सार सर्वस्व है।

यद्यपि सम्प्रति शारीरिक अनुकूलता नहीं है किन्तु अन्तर्मन से उन हृदयरमण परमप्रेमास्पद का यत्किञ्चित् भी अनुस्मरण हो जाय तो वे सर्वान्तर्यामी सर्वेश्वर तो अनुग्रहविग्रहस्वरूप हैं। अवश्य ही कृपा करेंगे।

यह मानव जीवन क्षणभङ्गुर है कब यह विलीन हो जाय जिस प्रकार वृक्ष का परिपक्व फल कब निपतित हो जाय अतः श्रीहरि का चिन्तन ही सर्वोत्तम साधन है।

इस अस्वस्थता की स्थिति में कतिपय जनों द्वारा यह कहा जाना कि ये तो अस्वस्थता का नाटक कर रहे हैं। इस पर यह कह देना उचित होगा कि जैसी जिसकी धारणा मान्यता जो हो। सर्वज्ञ श्रीसर्वेश्वर प्रभु तो सर्वद्रष्टा है। हमें इसमें लेशमात्र भी विचार नहीं करना है प्रसङ्गानुसार यह भाव अभिव्यक्त किया गया।

इसके साथ यह भी कह देना उचित होगा जो भी व्यक्ति भगवदीय देवोत्तर सम्पत्ति को स्वकीय उपयोग में लेगा, उसे श्रीसर्वेश्वर प्रभु कभी भी क्षमा नहीं करेंगे, अस्तु यह भावना अपनी प्रस्तुत की गई है।

प्रस्तुत यह ''दिव्यचरितप्रभा'' ग्रन्थ सभी को मनन करना अभीष्ट है जिससे अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के पावन चरित का अवबोध हो सके।

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

शुभमिति - भाद्रशुक्ल १२
शुक्रवार, वि० सं० २०६८
दिनांक ९/९/२०११

आचार्यचरित की दिव्यता

सद्गुरु-आचार्य का क्या स्वरूप है? उनकी क्या महिमा है? इसका परिबोध ''आचार्यं मां विजानीयान्नावमन्येत कर्हिचित्'' इस भगवद् वचन से सहज में हो जाता है। सद्गुरु-आचार्य अपना प्रभाव स्वयं कभी प्रकट नहीं करते किन्तु श्रीहरि यदा कदा उनकी दिव्यता को अभिव्यक्त कर देते हैं। इतिहास प्रसिद्ध है कि आचार्य-प्रवर श्रीश्रीभट्टदेवजी के अंक में श्रीहरिव्यासदेवजी को दीक्षा से पूर्व ही साक्षात् युगलस्वरूप श्रीराधाकृष्ण के दर्शन हुए थे। इसी प्रकार तत्कालीन जयपुर नरेश को आचार्यपाद श्रीगोविन्दशरणदेवा-चार्यजी के श्रीविग्रह में श्रीराधाकृष्ण की दिव्य कान्ति के दर्शन हुये थे। जिससे नरेश ने पूज्य आचार्यदेव को ''श्री श्रीजी महाराज'' पदवी से अलङ्कृत किया था। तबसे परम्परागत रूप में अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के पीठासीन आचार्य को ''श्री श्रीजी महाराज'' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। आचार्यचरित की दिव्यता में युगलस्वरूप श्रीराधाकृष्ण की अहैतुकी कृपा ही हेतु है। आचार्यवृन्द तो स्वाराध्य के चिन्तन-ध्यान में सतत लीन रहते हैं। जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी श्री श्रीजी महाराज के पश्चात् आपश्री के ही कृपापात्र श्रीसर्वेश्वरशरण-देवाचार्य पीठासीन जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज हुए। आपका प्रभाव, आपके दिव्यचरित की प्रभा सर्वत्र प्रसारित होने लगी। आपकी स्तोत्र रचनाओं के अध्ययन एवं अनुशीलन से आपके अगाध वैदुष्य का परिज्ञान होता है। आप द्वारा रचित भागवत टीका ''सर्वेश्वरी'' का

नामोल्लेख मिलता है किन्तु बहुत प्रयास करने पर भी अद्यावधि ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हो सका है।

आपके अमोघ आशीर्वाद से जयपुर नरेश श्रीजगतसिंहजी को जयसिंह (तृतीय) नामक पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई थी। यद्यपि नरेश का अवसान पुत्र जन्म से पहले हो गया था तथापि गर्भस्थ शिशु का पुत्ररूप में जन्म होने से वे ही राज्य के उत्तराधिकारी घोषित हो गये। आप जब बालक ही थे तब राजमाता की सदिच्छा से जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्य के तत्त्वावधान में सद्गुरु आचार्य श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्य का विशाल महोत्सव जयपुर में राजकोषीय प्रबन्ध से सम्पन्न हुआ था। जयपुर के कविवर देवर्षि श्रीमण्डनजी ने स्वरचित ''जयसाह सुजस प्रकाश'' नामक ग्रन्थ में महोत्सव का साङ्गोपाङ्ग वर्णन किया है। उन्हीं पूर्वाचार्यवर्य श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के लोकोत्तर चरितों का वर्णन वर्तमान पीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज ने अपने सद्यः रचित ''दिव्यचरितप्रभा'' नामक ग्रन्थ में विशद रूप से किया है जिसका सानुवाद प्रकाशन किया जारहा है। प्रस्तुत ग्रन्थ के पठन-मनन द्वारा आचार्यपाद के दिगन्तव्यापि मङ्गलमय चरित से समस्त श्रद्धालु भक्तजन लाभान्वित होंगे। दिव्य चरित प्रभा का आलोक सर्वत्र अनवच्छिन्न प्रसारित होता रहेगा इसी दृढ विश्वास के साथ लेखनी को विराम देता हूँ।

श्रीचरणरजरेणु--

निम्बार्कभूषण **वासुदेवशरण उपाध्याय** व्या. सा. वेदान्ताचार्य
प्राचार्य-श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज-

प्रणीतं-

श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्याष्टकं स्तोत्रम्

सर्वेश्वरस्य सुभगाऽर्चनदत्तचित्तं निम्बार्कवीथिपथिकं बुधसेव्यमानम् ।
श्रीमज्जगद्गुरुवरं गुरुभावनिष्ठं सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम् ।।
आचार्यवर्यममलं परमं वरेण्यं गोविन्दयुग्मचरणाम्बुजभक्तिलीनम् ।
स्तोत्रादिग्रन्थरचनासु महाप्रवीणं सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम् ।।
निम्बार्कमार्गयुत--भागवतार्थकारं दिव्यप्रभं शुभमनोज्ञविशालभालम्
नित्योर्द्ध्वपुण्ड्रधरमम्बुजलोचनञ्च सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम् ।।
वृन्दावनेशपदकंजमनोज्ञभृङ्गं राधापदाम्बुजसुगन्धरसावतृप्तम् ।
गीर्वाणवाणिकथने परमप्रवीणं सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम् ।।
निम्बार्कदेवशरणाग्रगुरुं शरण्यं निम्बार्कपीठभुवि नित्यसुशोभमानम् ।
आचार्यरूपजयपत्तनराजमानं सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम् ।।
निम्बार्कतीर्थजलपानकरं गुणज्ञं श्रीकृष्णभक्तिरसवारिधिगाहमानम् ।
निम्बार्ककीर्तनकरं द्विज-सद्भिः सेव्यं सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम्
लोकेश-पुष्करनिवासकरं सुधीशं श्रीयुग्मकेलिरसभक्तिभरं गरिष्ठम् ।
सौन्दर्य-सौम्यनिकषं वरणीयरूपं सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम् ।।
गोवर्धनाऽन्तिकमनोहरसुप्रसिद्ध-निम्बार्कपत्तनतपःस्थल-वासहृद्यम् ।
निम्बार्कदर्शनविवेकविलासदक्षं सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम् ।।

देवाचार्यान्त्यसर्वेशशरणस्तोत्रमिष्टदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज-

प्रणीतं-

श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्याष्टकं स्तोत्रम्

(१)

सर्वेश्वरस्य सुभगाऽर्चनदत्तचित्तं
निम्बार्कवीथिपथिकं बुधसेव्यमानम् ।
श्रीमज्जगद्गुरुवरं गुरुभावनिष्ठं
सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम् ।।

महर्षिवर्य श्रीसनकादिकों द्वारा सेवित आचार्य-परम्परा प्राप्त गुञ्जाफलसम सूक्ष्म दक्षिणावर्ती चक्राङ्कित शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सुन्दरतम दैनिक सेवा में जिनका पवित्रान्तःकरण लगा हुआ है । सुदर्शनचक्रावतार-जगद्गुरुवरेण्य आद्याचार्य श्री-भगवन्निम्बार्काचार्य की सुपावन आचार्यपरम्परा के पोषक। उत्तमोत्तम विद्वज्जनों द्वारा परिसेवित। अपने सद्-गुरुदेव निम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के श्रीयुगम चरणाम्बुजों में अनन्य भाव जिनका प्रतिष्ठित है ऐसे अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीसर्वेश्वरशरणदेवा-चार्य श्री 'श्रीजी' महाराज को प्रतिपल सर्वात्मना अनन्त प्रणाम समर्पित है ।

(२)

आचार्यवर्यममलं परमं वरेण्यं
गोविन्दयुग्मचरणाम्बुजभक्तिलीनम् ।
स्तोत्रादिग्रन्थरचनासु महाप्रवीणं
सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम् ।।

जिनका निर्मल परम वरेण्य पावन स्वरूप है। जगदीश्वर गोविन्द प्रभु के किंवा अपने ही गुरुवर्य श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज के युगलचरणारविन्दों की अनन्य भक्ति में सदा तल्लीन है। स्तोत्रादि सद्ग्रन्थों की अनुपम रचना में अत्यन्त कुशल हैं ऐसे आचार्यप्रवर श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के श्रीचरणों में मुहुर्मुहुः साष्टाङ्ग-प्रणाम निवेदित है ।

(३)

निम्बार्कमार्गयुत--भागवतार्थकारं
दिव्यप्रभं शुभमनोज्ञविशालभालम् ।
नित्योर्द्ध्वपुण्ड्रधरमम्बुजलोचनञ्च
सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम् ।।

सुदर्शनायुधावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य के सिद्धान्तानुसार श्रीमद्भागवत पर जिन्होंने सर्वेश्वरी नामक सुन्दर टीका (व्याख्या) का प्रणयन किया है और जिनका मङ्गलमय अतिकमनीय विशाल ललाट है तथा दिव्यकान्ति से देदीप्यमान गोपीचन्दन से श्यामबिन्दु-युक्त उर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण किये हुए हैं । कमलसदृश दिव्य नेत्रों से अति शोभायमान श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज को पुनः पुनः सश्रद्ध बद्धपाणि अनन्तकोटि प्रणाम अर्पित हैं ।

(४)

वृन्दावनेशपदकञ्जमनोज्ञभृङ्गं
राधापदाम्बुजसुगन्धरसावतृप्तम् ।
गीर्वाणगीःप्रकथने परमप्रवीणं
सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम् ।।

वृन्दावननवनिकुञ्जविहारी युगलकिशोर श्यामाश्याम श्रीराधाकृष्ण भगवान् के श्रीचरणकमलों के मञ्जुल मधुकर स्वरूप। पराभक्तिप्रदायिनी सर्वेश्वरी श्रीराधिकाजी के श्रीयुगलचरणारविन्दों की परम दिव्य सुगन्धरस से अत्यन्त आह्लादित और देववाणी संस्कृत प्रवचनोपदेशामृत वर्षण में परमकौशलसम्पन्न श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के विमल पादपद्मों में प्रणति पूर्वक अभिवन्दना।

(५)

निम्बार्कदेवशरणाग्रगुरुं शरण्यं
निम्बार्कपीठभुवि नित्यसुशोभमानम् ।
आचार्यरूपजयपत्तनराजमानं
सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम् ।।

जो श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्य जी महाराज के श्रीमद्गुरुवरेण्य हैं जो परम शरण्य है । अ० भा० जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठ में एवं राजस्थान में अवस्थित अतिशय प्रख्यात अति रमणीय जयपुर महानगर में भी विराजमान रहे हैं उन परमाचार्य प्रवर श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज को सभक्ति अनन्त साष्टाङ्ग प्रणाम करते हैं ।

(६)

निम्बार्कतीर्थजलपानकरं गुणज्ञं
श्रीकृष्णभक्तिरसवारिधिगाहमानम् ।
निम्बार्ककीर्तनकरं द्विज-सद्भिः सेव्यं
सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम् ।।

"पद्मपुराण" में वर्णित निम्बार्कतीर्थ सरोवर के निर्मल-जल का सेवन करने वाले सद्गुणसंवलितजनों के उत्तम गुणों के ज्ञाता, श्रीराधाकृष्ण भक्तिरससुधा में अवगाहन परायण, श्रीनिम्बार्क भगवान् के दिव्य नाम संकीर्तन करने में तत्पर, सद्विप्रजनों सन्त-महात्माओं से जो परिसेवित हैं ऐसे श्रीमदाचार्यवर श्रीसर्वेश्वरशरण-देवाचार्यजी महाराज के चरणकमलों में नित्यशः प्रणाम करते हैं।

(७)

लोकेश-पुष्करनिवासकरं सुधीशं
श्रीयुग्मकेलिरसभक्तिभरं गरिष्ठम् ।
सौन्दर्य-सौम्यनिकषं वरणीयरूपं
सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम् ।।

विश्व के समस्त तीर्थों के गुरु पद पर अतिशय सुशोभित जगत्स्रष्टा ब्रह्मदेव के ब्रह्मपुष्कर में जिन आचार्यश्री ने निवास किया है, उत्तमोत्तम विद्वज्जनों में परम श्रेष्ठ अग्रगण्य श्रीधामवृन्दावनाधीश्वर श्रीराधामाधव प्रभु के मधुरातिमधुर दिव्यातिदिव्य लीलाविलास रसभक्ति से परिपूर्ण और परम श्रेष्ठ सुन्दरतम तथा सौम्य सारल्य के पावन स्वरूप, जिनके अनुपम स्वरूप का वर्णन अपूर्व है ऐसे आचार्य शिरोमणि श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के युगमपदाम्बुजों में

प्रतिपल कोटि-कोटि प्रणाम समर्पित है ।

(८)

गोवर्धनाऽन्तिकमनोहरसुप्रसिद्ध-
निम्बार्कपत्तनतपःस्थल-वासहृद्यम् ।
निम्बार्कदर्शनविवेकविलासदक्षं
सर्वेश्वरस्य शरणं प्रणमामि देवम् ।।

व्रजधाम में अविरल रूप से अत्यन्त शोभायमान गिरिराज श्रीगोवर्धन जिसके अतिशय समीप परम मनोहर परम सुप्रसिद्ध निम्बग्राम जहाँ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य की तपोभूमि (तपःस्थली) है वहाँ जिन्होंने अनेकों वार निवास करके आनन्द का अनुभव किया है। श्रीनिम्बार्क भगवान् के दार्शनिक स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त के विवेचन करने में जो अतीव प्रवीण है ऐसे आचार्यवर श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज के युग्मचरणाम्बुजों में कोटिशः प्रणामाञ्जलि अर्पित है ।

(९)

देवाचार्यान्त्यसर्वेशशरणस्तोत्रमिष्टदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्याष्टक स्तोत्र जिसके पठन-मनन करने से अपने परम प्रेमास्पद परमाराध्य श्रीसर्वेश्वर-राधामाधव प्रभु के मङ्गलमय दिव्य दर्शन कराने वाला है, जिसकी यथामति हमको निमित्त बनाकर इसकी रचना करायी गयी है यह यथार्थ में इन्हीं आचार्यश्री की कृपा का प्रसाद मात्र है ।

अनुवादक - श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्रीगोपीजनवल्लभाष्टक - स्तोत्रम्

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद की आचार्य परम्परा में जगद्गुरु श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज अत्यन्त प्रभावशाली आचार्य हुए। स्वसम्प्रदाय में ही नहीं वैष्णव चतुःसम्प्रदाय में आपका अनुपम वर्चस्व था। आपश्री की काव्य रचना में "श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकस्तोत्रम्" प्रसिद्ध रचना है। वैष्णवजन इसका नित्य पाठ करते हैं। स्तोत्र में आचार्यपाद ने मन्त्रात्मा देवता के अनुसार स्वाराध्य नित्यनिकुञ्जविहारी भगवान् सर्वेश्वर श्रीकृष्ण के स्वरूप-गुणों और विग्रहगुणों का प्राञ्जल रूप में वर्णन किया है। सर्वजन बोधाय स्तोत्र का सरल हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया जारहा है।

नवाम्बुदानीक-मनोहराय, प्रफुल्लराजीव-विलोचनाय।
वेणु-स्वनाऽऽमोदितगोकुलाय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय ।।१।।

भगवान् के स्वरूप और विग्रह उभयविध दिव्य गुणों का निगमागम प्रभृति समस्त शास्त्रों में प्रभूत रूप में परिवर्णन मिलता है। आचार्यप्रवर प्रभु के विग्रहगुण जो अनन्त सौन्दर्य-माधुर्य-लावण्य-मार्दवादि के निधान हैं-उनका वर्णन करते हुए कहते हैं-हे प्रभो! आपके अङ्गप्रत्यङ्ग की कान्ति नवीन वर्षाकालिक मेघ खण्डों की नीलिमा जैसी है जो अत्यन्त मनोहर है, आपके नेत्रयुगल पर्याप्त रूप में खिले हुए कमल पत्र के समान सुन्दर हैं, आप जब अपनी परमप्रिय वंशी को अधरोष्ठ में विराजमान कर सप्त स्वरों के

साथ बजाते हैं तब उसका श्रवण कर समस्त गोकुल नगरी के निवासी आबाल वृद्ध नर-नारीजन मुग्ध हो जाते हैं। यहाँ गोकुल शब्द "गवां कुलम्" के अनुसार गायों का समूह और गोकुल ग्राम द्व्यर्थक है! क्योंकि "गोकुलं वन वैकुण्ठम्" कहकर उसे वैकुण्ठ का स्वरूप बताया है। अतः वेणु निनाद से जैसे गोकुलवासी मुग्ध होते वैसे ही गोवृन्द भी घास चरना छोड़कर मुग्ध भाव से कान ऊँची कर वंशी ध्वनि सुनते हैं। ऐसे गोपीजनवल्लभ आपको हम बार-बार नमन करते हैं। "गोपीजनवल्लभ" शब्द के प्रयोग द्वाराआचार्यपाद अनेक भाव प्रकट कर रहे हैं-गोपी-श्रीराधा और उनके जन सहचरीवृन्द के प्रियतम निकुञ्जविहारी श्रीकृष्ण, इससे निकुञ्जोपासना का भाव प्रकट किया जो सम्प्रदाय की मुख्य उपासना है। दूसरा भाव-गोपीजन-व्रजगोपियों के प्राणवल्लभ नन्दनन्दन श्रीकृष्ण इससे व्रज लीला का भाव प्रकट किया। तीसरा भाव-गोपी श्रीराधा जन-उनकी अंशभूता लक्ष्मी आदि शक्तियों रानियों के वल्लभ द्वारकाधीश श्रीकृष्ण-इससे ऐश्वर्य प्रधान माधुर्य द्वारकालीला का भाव प्रकट किया। चतुर्थ भाव-गोपी-प्रकृति अर्थात् पराशक्ति रूप जीवात्मा के जन अनन्तानन्त अंशभूत स्वरूपों के स्वामी-अंशी-"व्यापिनं परम सत्यमंशिनम्" इत्यादि शास्त्र वचन के अनुसार स्वाभाविक भेदाभेद सम्बन्ध रूप सम्प्रदाय सिद्धान्त का भाव भी प्रकट किया गया है॥१॥

किरीट-केयूर-विभूषिताय, ग्रैवेय-मालामणि-रञ्जिताय।
स्फुरल्लसत्काञ्चन-कुण्डलाय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय॥२॥

हे गोविन्द! आपके मस्तक पर मणिजटित स्वर्ण मुकुट सुशोभित है एवं भूजदण्डों पर बाजुबन्द शोभायमान है। कण्ठ में वनमाला तथा वैजयन्ती माला जगमगा रही है। तुलसी, कुन्द, मन्दार, करवीर, कमल इन पाँच प्रकार के पुष्पों की माला को वनमाला की संज्ञा दी है, वज्र, वैदूर्य, माणिक्य, मोती एवं स्वर्ण इन पञ्चविध रत्नों से निर्मित माला को वैजयन्ती कहा गया है। उभयविध माला का निर्देश "मालामणि" शब्द से दिया गया है। अतः आपाद लम्बित पुष्पहार और रत्नहार से अभिरञ्जित आपकी शोभा अनुपम है। काञ्चन निर्मित मकराकृत कुण्डल जिसमें हीरे मोती जड़े हुए हैं वे आपके कर्ण युगल में जगमगा रहे हैं ऐसे गोपीजनवल्लभ आपको सदा नमन करते हैं॥२॥

दिव्याङ्गनावृन्दनिषेविताय, स्मितप्रभाचारुमुखाम्बुजाय।
त्रैलोक्यसंमोहन-सुन्दराय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय ।।३ ।।

श्रीधामवृन्दावन के निभृत निकुञ्जों में प्राणवल्लभा किशोरी श्रीराधाजी के संग रङ्गदेवी-सुदेवी-ललितादि दिव्याङ्गना (सहचरी) वृन्द से आप सदा परिसेवित रहते हैं, हे श्यामसुन्दर! मन्द हास्य और विलासमय चितवन से आपके मुखकमल की शोभा दर्शनीय बनी हुई है, इन विविध अङ्गकान्ति एवं हावभाव से तीनों लोकों के प्राणी मोहित हो जाते हैं अतः आप त्रैलोक्य मोहन सुन्दर कहलाते हैं ऐसे सखीवृन्द के प्राणवल्लभ आपको मैं सहचरी भाव से सदा नमन करता हूँ॥३॥

रत्नाद्रि-मूलालय-संगताय, कल्पद्रुमच्छाय-कृतासनाय।
हेमस्फुरन्मण्डपमध्यगाय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय ।।४ ।।

व्रजलीला का भाव दर्शाते हुए आचार्यवर्य कहते हैं-हे व्रजजीवन! हे गोपाल! आप गोचारण करते हुए जब रत्नमयी शिलाओं के सुरम्य गिरिराज गोवर्धन की तलहटी में पहुँच जाते तब गोपवृन्द के साथ पर्वत कन्दरा में अपना आश्रय स्थल बना लेते हैं तथा कल्पवृक्षों को लजाने वाले कदम्ब-तमालों की सघन छाया में आसन बांध कर विराजमान हो जाते हैं। वहीं पर चमकती हुई मणिमय शिलाओं से निर्मित मणि मण्डप के मध्य नानाविध क्रीडा करते हुए गोपवालों को आनन्दित करते हैं ऐसे गोप गोपीजन-वल्लभ आपको मैं सदा नमन करता हूँ।।४।।

श्रीवत्सरोमावलिरंजिताय, वक्षःस्थले कौस्तुभ-भासिताय।
सरोजकिंजल्कनिभांशुकाय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय।।५।।

हे राधारमण! आपके वक्षःस्थल में श्रीवत्स चिह्न की रोमावलियाँ शोभायमान हैं और कौस्तुभमणि की दीप्ति सर्वत्र फैल रही है। आपके श्रीअङ्ग में कमल पराग की द्युति तुल्य पीताम्बर घनमण्डल में दामिनी की तरह सुशोभित है ऐसे असीम सौन्दर्य के निधान गोपीजनवल्लभ आपको सदा नमन करते हैं।।५।।

दिव्याङ्गुलीयांगुलि-रंजिताय, मायूर-पिच्छच्छवि-शोभिताय।
दिव्याम्बरालंकृत-विग्रहाय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय।।६।।

हे मुरलीधर! आपके करकमल की अङ्गुलियाँ दिव्यातिदिव्य मुद्रिकाओं से चमक रही हैं, आपने अपने मणिमय मुकुट के ऊपर मोरपङ्ख का गुच्छ धारण कर रखा है जो अत्यन्त शोभा बढा रहा है, आपके अङ्ग-प्रत्यङ्ग पूर्वोक्त नानाविध वस्त्रालङ्कारों से अलङ्कृत हैं, ऐसे व्रजगोपियों के प्राणधन गोविन्द को हम सदा अभिवन्दन

करते हैं॥६॥

मुनीन्द्रवृन्दैर्विधि-संस्तुताय, रक्षोगणाद् गोकुलरक्षकाय।
धर्मार्थ-कामामृत-साधनाय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय॥७॥

हे सर्वेश्वर! महर्षि सनकादि-नारद-व्यास प्रभृति मुनिवृन्द आपका विधि पूर्वक स्तवन, वन्दन करते हैं। कंस के अनुयायी पूतना-शकटासुर-तृणावर्त-वत्स-बकासुर प्रभृति राक्षसों से आप निरन्तर गोकुलवासी किंवा व्रजवासी एवं गोयूथों की रक्षा करते हैं, शरणागत भक्तों को धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष रूप चतुर्विध पुरुषार्थ को प्रदान करने वाले ऐसे करुणावरुणालय, गोपीजनवल्लभ आपको बारम्बार प्रणाम करते हैं॥७॥

मनस्तमस्तोमदिवाकराय, भक्तेष्टचिन्तामणिसन्निभाय।
अशेष-दुर्नामजभेषजाय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय॥८॥

भगवान् के स्वरूप गुणों का वर्णन करते हुए आचार्यचरण कहते हैं हे हरे! जो जन आपका स्मरण करता है, स्मरणमात्र से आप उसके मन के घनीभूत अज्ञानान्धकार को उसी प्रकार हर लेते है जैसे सूर्य रात्रि के अन्धकार को नष्ट करते हैं। भक्तों की इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए चिन्तामणि के समान हैं, जन्मजन्मान्तरीय पापपुञ्ज जनित जन्ममरण रूप रोग को नष्ट करने के लिए आपके गोविन्द, गोपाल, कृष्ण, हरि प्रभृति मङ्गलमय नाम दिव्य औषध हैं ऐसे सकल पाप ताप हारी गोपीजनवल्लभ प्रभु को मैं सदा प्रणिपात पूर्वक वन्दन करता हूँ॥८॥

अनुवादक - वासुदेवशरण उपाध्याय

(१)

श्रीसर्वेश्वरशरण गुरुदेव ।
श्रीनिम्बारकपीठ विराजित, अभिरत श्रीप्रभु पावन सेव ।।
सन्त–सुधीजन जय जय उचरत, पावत रसमय मिश्री–मेव ।
पौष–सुदी छठ शुभ पाटोत्सव, नाचत गुणिजन तत्–थै थेव।
मधुर बधाई प्रियजन गावत, सुमन–वृष्टि कर वांछित लेव ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, भव सागर की नैया खेव ।।

(२)

श्रीसर्वेश्वर शरण मनोहर ।
देवाचारज श्रीनिम्बारक,–पीठ सिंहासन शोभित सुन्दर ।।
जगद्गुरुवर अनुपम दरशन, करि–२ भावुक अतिनत होकर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पाट–महोत्सव हरषित बुधवर ।।

(३)

श्रीसर्वेश्वरशरण चरण रज ।
पावन महिमा गावत बुधजन, साष्टाङ्ग नमत हि पावत श्रीव्रज।।
श्रीसर्वेश्वर ध्यान निरत नित, व्याख्या रचिता भागवत संभज।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, आश्रय पावो भवासक्ति तज ।।

(४)

श्रीसर्वेश्वरशरण कृपार्णव ।
अतीव दयालु अतिहितकारी, निर्मल जीवन प्रभजत माधव ।।
रासविहारी रासरसविलसत,निज मन प्रमुदित तजि भव वैभव।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, आचार्यशिरोमणि शोभित अभिनव।।

(५)

श्रीसर्वेश्वरशरण शुभ दर्शन ।
वैष्णव भावुक तन्मय होकर, दर्शन आवत अतिशयतर्षन ।।
चरण शरण हो दीक्षा पाकर, तुलसी–कण्ठी परम आकर्षन ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, ऊर्ध्वपुण्ड्र निज भाल सुदर्शन ।।

*

(१)

श्रीमत्सर्वेश्वरशरण, देवाचार्य महान ।
श्री "श्रीजी" महाराजवर, शोभित "शरण" अमान ।।

(२)

प्रसिद्ध जगद्गुरुवरेण्य, पूजत सन्त समाज ।
अनन्य भावुक भक्तजन, "शरण" नमत तज काज ।।

(३)

करुणासागर आप है, कृपाधाम निष्काम ।
श्रीमत्सर्वेश्वरशरण, शोभा "शरण" ललाम ।।

(४)

सर्वेश्वर-सेवा निरत, शरणागत-प्रतिपाल ।
श्रुति-स्मृति-सूत्र-पुराणादि, ज्ञाता "शरण" त्रिकाल ।।

(५)

सन्त समागम हरि कथा, भगवत-कीर्तन सार ।
सर्वेश्वर सेवा निरत, तन्मय, "शरण" निहार ।।

(२०)

प्रतापगढ-अगर-नागल, जहाँ विसर्जित देह ।
श्रीमत्सर्वेश्वरशरण, स्ववपु "शरण" अनेह ।।

(२१)

तहँ जयपुर जयशाह ने, छत्री बनाई भव्य ।
निम्बार्कशरणदेव की, कृपा "शरण" ज्ञातव्य ।।

(२२)

सर्वेश्वरशरणदेव की, प्राकट्य-भू-सराय ।
जयपुर राज्य में प्रसिद्ध, ग्राम "शरण" सुखदाय ।।

(२३)

गौड़ विप्र में जन्म लिया, शालग्राम सुनाम ।
पिता भवानीरामजी, "शरण" सदा हि प्रणाम ।।

(२४)

शालग्राम स्वरूप हैं, सर्वेश्वर भगवान ।
सुतरां सर्वेश्वरशरण,-देव "शरण" विद्वान ।।

(२५)

श्रीनिम्बार्काचार्यश्री, सदा सुशोभित आप ।
परम सिद्धि सम्पन्न हैं, पावन "शरण" प्रताप ।।

(२६)

भारत वसुधा सुभगतम, पुनीत राजस्थान ।
कर विचरण आचार्यश्री, लिया "शरण" सम्मान ।।

(२७)

वैदिक वैष्णव सनातन,-धर्म असीम प्रचार ।
श्रीमत्सर्वेश्वरशरण, द्रुतगति "शरण" प्रसार ।।

(२८)

निम्बार्कपीठाचार्यवर, निम्बार्कतीर्थ वास ।
सलेमाबाद गाँव प्रिय, राजत "शरण" नहि त्रास ।।

(२९)

पावन पुष्कर क्षेत्र में, विदित किशनगढ नाम ।
अजमेर नगर की ख्याति "शरण" परम अभिराम ।।

(३०)

पवित्र भारतवर्ष में, शोभित राजस्थान ।
श्रीनिम्बार्कतीर्थ तहाँ, वर्णन "शरण" पुरान ।।

(३१)

शोभित जहँ प्रभु सर्वेश्वर, श्रीसनकादिकसेव्य ।
राधामाधव सतत, जय-देव "शरण" परिगेव्य ।।

(३२)

श्रीसनकादिक सेव्य हैं, सर्वेश्वर भगवान ।
शालग्राम स्वरूप प्रभु, सूक्ष्मरूप जग जान ।।

(३३)

राधामाधव श्रीप्रभू, सेवित कवि जयदेव ।
अनुपम दर्शन सुन्दरतम, "शरण" सदा परिसेव ।।

(३४)

श्रीमत्सर्वेश्वरशरण,-देवाचार्य प्रसिद्ध ।
श्रीहरिभक्तिभाव भरित, "शरण" सिद्ध के सिद्ध ।।

(३५)

एकदा अति सिद्ध-सन्त, विचरत आये पीठ ।
करी याचना दुग्ध की, "शरण" विलक्षण ढीठ ।।

(३६)

दिया दुग्ध जब सन्त को, भरा न उनका पात्र ।
भर-भर मटकी डालदी, रीता "शरण" रह मात्र ।।

(३७)

विस्मित समस्त हो गये, किया निवेदन जाय ।
श्रीआचार्यप्रवर ने, दिया पात्र लघु आय ।।

(३८)

धारा दुग्ध की वह चली, सन्त हृदय अकुलाय ।
सन्त पात्र तो भर गया, धारा "शरण" ढलाय ।।

(३९)

देख चमत्कृति सन्त भी, शरणागत हुव आय ।
श्रीमदाचार्यचरण ने, क्षमा "शरण" अवदाय ।।

(४०)

एवंविध बहु चरित हैं, श्रीचरणों के श्रेष्ठ ।
जय हो जय हो जयति जय, सतत "शरण" जय प्रेष्ठ ।।

(४१)

श्रीसर्वेश्वरशरणपद,-पङ्कज प्रतिपल ध्यान ।
अनुपम शोभा सुभग है, "शरण" प्रणति तज मान ।।

(४२)

राधामाधव रटत नित, श्रीसर्वेश्वर सेव ।
निगमागम स्वाध्यायरत, "शरण" स्वाचार्यदेव

(४३)

श्रीसर्वेश्वरशरण नति, करते विद्वद्वृन्द ।
वैष्णव भावुक भक्तजन, "शरण" प्रगावत छन्द ।।

(४४)

व्रज-वृन्दावन वास हित, पदाति यात्रा होय ।
सर्वेश्वरशरणदेवा-चार्य "शरण" हिय धोय ।।

(४५)

सर्वेश्वर निज कण्ठ में, वसन ग्रन्थि युत धार ।
स्वसम्प्रदाय प्रचार हित, पुनि-पुनि करत विहार ।।

(४६)

सुधीजन साधु-भक्तजन, शोभित करत विहार ।
श्रीसर्वेश्वरशरणवर, जयति "शरण" बलिहार ।।

(४७)

जगद्गुरुवर पीठेश्वर, परमाचार्य महान ।
द्वैताद्वैत प्रचार रत, "शरण" लसत सम्मान ।।

(४८)

प्रकाण्ड पण्डित आपके, शरणागत नत होय ।
ऐसे सर्वेश्वरशरण, "शरण" प्रणति पद धोय ।।

(४९)

निम्बारक सिद्धान्त का, वैष्णव धर्म प्रचार ।
श्रुति-वेदान्त उपदेष्टा, अनुपम "शरण" निहार ।।

(५०)

अतुलित वैभव आपका, प्रणति सदा करबद्ध ।
परम कृपालु कृपा करहु, "शरण" प्रणति सश्रद्ध ।।

(५१)

सर्वेश्वर समुपासना, सर्वेश्वर का ध्यान ।
सर्वेश्वर का जाप नित, "शरण" सदा व्रतवान ।।

(५२)

पुनि-पुनि व्रज के वास की, करत लालसा रोज ।
अगणित साधु सुभक्तजन, "शरण" करावत भोज ।।

(५३)

ऐसे है आचार्य प्रभु, महिमा परम अपार ।
श्रीसर्वेश्वर शरण वर, विदित "शरण" संसार ।।

(५४)

जिनके पावन दरश हित, अकुलाते सब लोग ।
श्रीफल मुद्रा साथ में, ल्यावत "शरण" निरोग ।।

(५५)

अनुपम सेवा साधना, सतत करत निशिभोर।
श्रीसर्वेश्वर शरण वर, प्रणति "शरण" कर जोर॥

(५६)

सकल भक्त वांछत सदा, दर्शन सुभग महान।
श्रीसर्वेश्वर शरण वर, शास्त्र "शरण" प्रमान॥

(५७)

वृन्दावन चिन्मय धरा, शोभित युगलकिशोर।
जगद्गुरु आचार्यप्रवर, ध्यावत "शरण" विभोर॥

(५८)

गोवर्धन अतिनिकटतम, निम्बग्राम निवास।
आराधन श्रीयुगल का, करत "शरण" व्रजवास॥

(५९)

भाग्य सरावत सन्तजन, जय-जय उचरत रोज।
श्रीचरणों के दरश कर, विकसित "शरण" सरोज॥

(६०)

कुण्ड सुदर्शन आचमन, कर-कर मुदित समाज।
श्रीसर्वेश्वरशरण वर, दर्शन "शरण" सुकाज॥

(६१)

श्रीवृन्दावन धाम की, परिक्रमा सुप्रभात।
सपरिकर आचार्यवर, करत "शरण" सुन बात॥

(६२)

जपते हैं प्रतिदिन मुदित, गोपालमन्त्रराज।
पावन जिनका रूप है, चलो "शरण" तज काज।।

(६३)

ब्रह्मा-विष्णु-महेश भी, होते मुदित अपार।
एवंविध आचार्यवर, प्रणति "शरण" जयकार ।।

(६४)

मनसा-वाचा-कर्मणा, प्रणमत बारम्बार।
अन्तर्मन में वस रहो, अभिमत "शरण" निहार।।

(६५)

जगद्गुरु पद शोभित हैं, विचरत धरणी धाम।
वैष्णव धर्म प्रचाररत, जयति "शरण" तज काम।।

(६६)

श्रुति सम्मत सिद्धान्त का, विवेक परम अपार।
यही साधना आपकी, जय जय "शरण" निहार।।

(६७)

अतुलित वैभव आपका, गज-रथ-अश्व अपार।
गोमाता-सेवा निरत, जगति "शरण" हिय धार।।

(६८)

पादप-रोपण करत हैं, जयति जयति बलिहार।
ऐसे हैं आचार्यश्री, विदित "शरण" नर-नार।।

(६९)

भाव भरित होकर सदा, प्रजपत मुकुन्द मन्त्र ।
परम तपोधन श्रीचरण, जानत "शरण" सुतन्त्र ।।

(७०)

वर्णन करना कठिन है, गुण-महिमा अवधार ।
जिनकी पावन शरण में, बोलो "शरण" जयकार ।।

(७१)

मंजुल पावन चरित है, सुनि-सुनि होत निहाल ।
राधासर्वेश्वरशरण, लेत "शरण" प्रतिपाल ।।



